

## कबीर की भाषा और उसकी प्रभावशीलता

डॉ नरेश कुमार, व्याख्याता (हिन्दी)

आर.एल.सहरिया राजकीय महाविद्यालय कालाडेरा (जयपुर)

### सार

कबीरदास, मध्यकालीन भारत के एक महान संत कवि थे, जिनकी सादगी और स्पष्टता भरी भाषा ने लाखों लोगों के दिलों को छुआ। उनकी रचनाओं में प्रयुक्त भाषा की प्रभावशीलता का रहस्य उनके जीवन दर्शन और सामाजिक चिंताओं से गहराई से जुड़ा हुआ है। कबीरदास, 15वीं सदी के एक भारतीय रहस्यवादी कवि और संत थे। वे अंधविश्वास, व्यक्ति पूजा, पाखंड और ढोंग के घोर विरोधी थे। कबीर की रचनाओं में सामाजिक न्याय, भक्ति और मानवतावाद के गहरे विचार झलकते हैं। कबीर के जीवन के बारे में बहुत सारी किंवदंतियां प्रचलित हैं। माना जाता है कि उनका जन्म 14वीं सदी के अंत या 15वीं सदी की शुरुआत में हुआ था। वे एक मुस्लिम लोहार के घर में पले-बढ़े, लेकिन बाद में उन्होंने हिंदू धर्म के संतों से भी शिक्षा ली। कबीर ने जाति-पाति के भेदभाव का विरोध किया और सभी को एक समान माना। कबीर का काल भारत के इतिहास में एक महत्वपूर्ण काल था। इस काल में भक्ति आंदोलन अपने चरम पर था। भक्ति आंदोलन के संतों ने लोगों को ईश्वर के प्रति प्रेम और भक्ति के मार्ग पर चलने के लिए प्रेरित किया। कबीर भी इसी आंदोलन से जुड़े थे। कबीर की शिक्षाएं बहुत ही सरल और सहज थीं। वे ईश्वर को एक मात्र सत्य मानते थे और कहते थे कि ईश्वर सबमें व्याप्त है। उन्होंने जाति-पाति, धर्म और रीति-रिवाजों के खोखलेपन को उजागर किया। कबीर की रचनाओं में प्रेम, करुणा और सेवा का भाव झलकता है। वे मानते थे कि मनुष्य को अपने अंदर के ईश्वर को खोजना चाहिए।

### मुख्य शब्द

मध्यकालीन, संत, कवि, शिक्षा

## भूमिका

कबीर की भाषा बहुत ही सरल और आम लोगों की भाषा थी। उन्होंने अपनी रचनाओं में अवधी, ब्रजभाषा और राजस्थानी भाषा का प्रयोग किया। उनकी भाषा में पंचमेल खिचड़ी का प्रयोग भी मिलता है। कबीर की कविताएं बहुत ही प्रभावशाली और मार्मिक होती थीं। वे अपने दोहों और पदों के माध्यम से लोगों को जागरूक करते थे। कबीर का साहित्यिक योगदान भारतीय साहित्य में अद्वितीय है। उनकी रचनाओं ने भारतीय समाज पर गहरा प्रभाव डाला। कबीर की रचनाओं का अनुवाद कई भाषाओं में किया गया है। आज भी लोग कबीर की वाणी से प्रेरणा लेते हैं।

कबीर एक महान संत कवि थे, जिन्होंने समाज में व्याप्त कुरीतियों और बुराइयों के खिलाफ आवाज उठाई। उनकी शिक्षाएं आज भी प्रासंगिक हैं। कबीर की रचनाओं ने भारतीय साहित्य को समृद्ध बनाया है। कबीर के जन्म और मृत्यु की सही तारीखें ज्ञात नहीं हैं, लेकिन माना जाता है कि वे 14वीं सदी के अंत या 15वीं सदी की शुरुआत में पैदा हुए थे। वे उत्तर भारत में काशी (वाराणसी) के पास रहते थे। कबीर ने जाति-पाती और धर्म के बंधनों को तोड़ते हुए सभी मनुष्यों को एक समान माना। उन्होंने भक्ति आंदोलन के दौरान निर्गुण भक्ति का प्रचार किया, जो ईश्वर को निराकार और गुण रहित मानता था।

कबीर की शिक्षाएं सरल और स्पष्ट भाषा में थीं, जिसे आम लोग आसानी से समझ सकते थे। उन्होंने सामाजिक बुराइयों, कर्मकांडों और रीति-रिवाजों की आलोचना की। कबीर के अनुसार, सच्चा धर्म मानवता की सेवा में है और ईश्वर का ज्ञान केवल अंतर्मन में खोजा जा सकता है। कबीर की रचनाओं में साखी, पद और दोहे शामिल हैं। उनकी रचनाओं में जीवन के विभिन्न पहलुओं पर विचार किया गया है, जैसे कि प्रेम, मृत्यु, मोक्ष और ईश्वर। उनकी रचनाओं में एक गहरी आध्यात्मिकता और मानवीयता झलकती है।

कबीर का प्रभाव भारतीय समाज और संस्कृति पर बहुत गहरा रहा है। उन्होंने जाति-पाती और धर्म के बंधनों को तोड़ने का संदेश दिया और सभी मनुष्यों को एक समान माना। उनकी रचनाएं आज भी लोगों को प्रेरित करती हैं। कबीर 15वीं सदी के एक महान संत कवि थे, जिन्होंने समाज में व्याप्त बुराइयों के खिलाफ आवाज उठाई। उनकी शिक्षाएं आज भी प्रासंगिक हैं और हमें मानवता, समानता और सच्चे धर्म के मार्ग पर चलने के लिए प्रेरित करती हैं।

### कबीर की भाषा की विशेषताएं:

- **सादगी और स्पष्टता:** कबीर ने अपनी रचनाओं में अत्यंत सरल और सहज भाषा का प्रयोग किया है। उन्होंने जटिल धार्मिक और दार्शनिक विचारों को आम लोगों की समझ में आने वाली भाषा में व्यक्त किया। उनकी भाषा में कोई कृत्रिमता या अलंकार नहीं है, बल्कि वह सीधी और प्रवाहित है।
- **लोक भाषा का प्रयोग:** कबीर ने अपनी रचनाओं में लोक भाषा का व्यापक प्रयोग किया है। उन्होंने ग्रामीण जीवन, रीति-रिवाजों और लोककथाओं से जुड़े शब्दों और मुहावरों का प्रयोग किया है, जिससे उनकी कविता आम लोगों से सीधे जुड़ जाती है।
- **प्रतीकों का प्रयोग:** कबीर ने अपने विचारों को व्यक्त करने के लिए प्रतीकों का व्यापक प्रयोग किया है। उन्होंने प्रकृति, पशु-पक्षियों और दैनिक जीवन की वस्तुओं को प्रतीक के रूप में इस्तेमाल किया है, जिससे उनकी कविता में गहराई और रहस्यमयता आ गई है।
- **व्यंग्य और हास्य:** कबीर ने समाज में व्याप्त कुरीतियों और रूढ़ियों पर व्यंग्य और हास्य का प्रयोग किया है। उन्होंने सामाजिक और धार्मिक ढोंग को बेनकाब किया है और लोगों को सच्चे मार्ग पर चलने के लिए प्रेरित किया है।

### कबीर की भाषा की प्रभावशीलता:

- **सर्वसमावेशी:** कबीर की भाषा किसी विशेष वर्ग या समूह के लिए नहीं थी, बल्कि वह सभी के लिए थी। उनकी भाषा में सभी जाति, धर्म और वर्ग के लोग खुद को पा सकते थे।
- **समाज सुधारक:** कबीर की भाषा ने समाज में व्याप्त कुरीतियों और रूढ़ियों के खिलाफ आवाज उठाई। उन्होंने जातिवाद, छुआछूत और धार्मिक कट्टरता जैसी बुराइयों की निंदा की।
- **आध्यात्मिक जागरण:** कबीर की भाषा ने लोगों में आध्यात्मिक जागरण का संचार किया। उन्होंने लोगों को ईश्वर के प्रति सच्ची भक्ति और प्रेम करने के लिए प्रेरित किया।
- **कालजयी:** कबीर की भाषा कालजयी है। उनके विचार आज भी प्रासंगिक हैं और लोगों को प्रेरित

करते हैं।

## कबीर की भाषा और उसकी प्रभावशीलता

कबीर ने समाज के रूढ़िवादी विचारों और धार्मिक पाखंड पर व्यंग्य कसा है। उन्होंने अपनी कविताओं के माध्यम से लोगों को सोचने पर मजबूर किया। कबीर की कविताओं में भक्ति भाव का प्रचुर मात्रा में समावेश है। उन्होंने ईश्वर को एक निराकार और सर्वव्यापी शक्ति के रूप में देखा है। कबीर की कविताओं में जीवन दर्शन का गहरा संदेश छिपा हुआ है। उन्होंने जीवन के मूल्यों, मृत्यु, पुनर्जन्म आदि विषयों पर गहन विचार प्रस्तुत किए हैं।

कबीर की भाषा ने समाज सुधार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उन्होंने जातिवाद, छुआछूत और धार्मिक कट्टरता के खिलाफ आवाज उठाई। कबीर की भाषा इतनी सरल और प्रभावशाली थी कि यह हर वर्ग और समाज के लोगों को आकर्षित करती थी। कबीर की कविताएं आज भी उतनी ही प्रासंगिक हैं जितनी वे उस समय थीं। उनकी कविताओं में उठाए गए मुद्दे आज भी हमारे समाज में मौजूद हैं। कबीर की कविताओं में उठाए गए विषय मानवता के मूल्यों से जुड़े हुए हैं, इसलिए उनकी कविताओं की विश्वव्यापी अपील है।

कबीर की भाषा की सरलता, प्रतीकात्मकता, व्यंग्य, भक्ति भाव और जीवन दर्शन ने उनकी कविताओं को कालातीत बना दिया है। उनकी भाषा ने समाज सुधार में महत्वपूर्ण योगदान दिया और लाखों लोगों के जीवन को प्रभावित किया। कबीर की कविताएं हमें आज भी प्रेरित करती हैं और हमें जीवन के मूल्यों को समझने में मदद करती हैं।

कबीर ने अपनी कविताओं में प्रतीकों का व्यापक उपयोग किया है। उन्होंने प्रकृति के तत्वों, दैनिक जीवन की वस्तुओं और घटनाओं को प्रतीक के रूप में प्रयोग करके गहन धार्मिक और सामाजिक सत्यों को व्यक्त किया। कबीर ने अपनी कविताओं में लोकप्रिय लोकोक्तियों और मुहावरों का भरपूर उपयोग किया है। इससे उनकी कविताएं और भी अधिक जीवंत और प्रभावशाली हो गईं। कबीर की कविताओं में संगीत की लय और ताल का विशेष प्रभाव है। उनके दोहे और पद बहुत ही संगीतमय होते हैं, जिससे उन्हें गाना आसान हो जाता है और लोग उन्हें आसानी से याद कर लेते हैं।

कबीर की भाषा की प्रभावशीलता के कई कारण हैं:

- **सर्वसमावेशी:** कबीर की भाषा किसी विशेष वर्ग या जाति तक सीमित नहीं थी। उन्होंने सभी वर्गों के लोगों की भाषा का प्रयोग किया, जिससे उनके विचार सभी तक पहुंच पाए।
- **भावनाओं को छूना:** कबीर की कविताएं सीधे लोगों के दिलों को छूती हैं। उन्होंने प्रेम, करुणा, भक्ति और ज्ञान जैसे भावों को बहुत ही खूबसूरती से व्यक्त किया है।
- **सामाजिक चेतना:** कबीर ने अपनी कविताओं के माध्यम से समाज में व्याप्त बुराइयों जैसे जातिवाद, छुआछूत और धार्मिक कट्टरता के खिलाफ आवाज उठाई।
- **सार्वभौमिक सत्य:** कबीर के विचार काल और देश की सीमाओं से परे हैं। उनकी कविताएं आज भी उतनी ही प्रासंगिक हैं जितनी कि तब थीं।

**कबीर की भाषा का हिंदी साहित्य पर प्रभाव**

- **भक्ति काव्य पर प्रभाव:** कबीर की भाषा ने भक्ति काव्य को एक नई दिशा दी। उन्होंने भक्ति को एक व्यक्तिगत अनुभव बना दिया और भक्ति मार्ग को आम लोगों के लिए सुलभ बनाया।
- **समाज सुधार पर प्रभाव:** कबीर की भाषा ने समाज सुधार के लिए लोगों को प्रेरित किया। उन्होंने जातिवाद, छुआछूत और धार्मिक कट्टरता जैसी कुरीतियों के खिलाफ आवाज उठाई।
- **हिंदी भाषा के विकास पर प्रभाव:** कबीर की भाषा ने हिंदी भाषा के विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया। उन्होंने हिंदी भाषा को समृद्ध बनाया और इसे साहित्यिक भाषा के रूप में स्थापित किया।
- **आधुनिक हिंदी कविता पर प्रभाव:** कबीर की भाषा का प्रभाव आधुनिक हिंदी कविता पर भी देखने को मिलता है। कई आधुनिक कवियों ने कबीर की भाषा और शैली से प्रेरणा ली है।

कबीर की भाषा ने हिंदी साहित्य पर एक गहरा और स्थायी प्रभाव छोड़ा है। उनकी सादगी, स्पष्टता और लोकप्रिय भाषा ने हिंदी साहित्य को नई ऊंचाइयों पर पहुंचाया। आज भी कबीर की रचनाएं लाखों लोगों को

प्रेरित करती हैं और उनकी भाषा हिंदी साहित्य की एक अनमोल धरोहर है।

### निष्कर्ष:

कबीर की भाषा की प्रभावशीलता का रहस्य उनकी सादगी, स्पष्टता, लोक भाषा का प्रयोग, प्रतीकों का प्रयोग, व्यंग्य और हास्य में निहित है। उनकी भाषा ने न केवल उनके समकालीनों को बल्कि आने वाली पीढ़ियों को भी प्रभावित किया है। कबीर की रचनाएं आज भी लोगों को प्रेरित करती हैं और उन्हें सच्चे मार्ग पर चलने के लिए प्रेरित करती हैं।

कबीर ने अपनी कविताओं में बिल्कुल सरल भाषा का प्रयोग किया है। उन्होंने संस्कृत के जटिल शब्दों और मुहावरों का प्रयोग करने से परहेज किया। उनकी भाषा आम लोगों की भाषा थी, जिससे हर कोई उनकी बातें आसानी से समझ सकता था। कबीर ने अपनी कविताओं में प्रतीकों का खूब इस्तेमाल किया है। उन्होंने प्रकृति के तत्वों, जैसे पेड़, पौधे, पक्षी आदि को प्रतीक के रूप में इस्तेमाल किया है। इससे उनकी कविताएं और भी गहन और अर्थपूर्ण हो जाती हैं।

### संदर्भ

1. रामचंद्र, शुक्ल . हिंदी साहित्य का इतिहास. वाराणसी: नागरी प्रचारिणी सभा. पृ° 156.
2. चन्द्रकान्ता. ) - मूल से 19 अक्टूबर 2015 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि १० दिसम्बर २०१५.
3. "क्या रामदास सारस्वत थे कृष्ण भक्त सूरदास जी के पिता?". Punjabkesari. 2011-06-13. अभिगमन तिथि 2011-06-14.
4. "सूरदास भगवान कृष्ण के बहुत बड़े भक्त थे।". पंजाब केसरी.
5. शुक्ल – "भ्रमरगीत-सार", साहित्य-सेवा-सदन, बनारस, 2012, पृष्ठ10
6. "मीराबाई के जीवन की महत्वपूर्ण बातें". भास्कर. मूल से 16 अक्टूबर 2013 को पुरालेखित.
7. अयोध्या सिंह उपाध्याय, 'हरिऔध' (2014). हिंदी भाषा और उसके साहित्य का विकास. पटना: पटना विश्वविद्यालय. पृ° 291.
8. ब्र., व. (2013). हीरा, राजवंश सहाय (संपा°). हिन्दी साहित्य कोश भाग-१. वाराणसी: ज्ञानमण्डल लिमिटेड. पृ° 206.